दिनांक :- 18-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ाकिर आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक : प्रथम खंड (अनुशांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

स्काई :- पाँच

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- उत्तर वैदिक सभ्यता

उत्तर वैदिक काल की सभ्यता (The later Vedic civilization)

उत्तर वैदिक काल का विस्तार ऋग्वैदिक काल के अंत और बौद्ध तथा जैन धर्मों के आरंभ काल के बीचमान मोटे तौर पर उत्तर वैदिक काल का फैलाव लगभग 1000 ई० पू० से 600 ई० पू० तक माना जाता है। इस काल में यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद और संहिताएं तथा

ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद ग्रंथो की रचना हुई।
ये ही रचनाएँ हमारे ज्ञान की आधार है! यजुर्वेद मे मंत्रो
का संग्रह है! ये मंत्र यज्ञ तथा अनुष्ठान से सम्बन्धित
है। ये अनुष्ठान उस समय की राजनीतिक और सामाजिक
परिस्थिति के परिचायक है! सामवेद मे गेय मंत्रो का
संग्रह है। इसमें 1549 ऋचाँए है। अथर्ववेद मे जादू
टोना चिकित्सा सम्बंधी मंत्र तथा पृथ्वी की रचनाँए की चर्चा
वैदिक संहिताओ के बाद ब्राह्मण ग्रंथो की रचना हुई थी।
इनमें यज्ञ क्रियाओ के विधि-विधानो की चर्चा है। ऐतरेय शत
पथ, पंचविश और गोपथ मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ है। ब्राह्मण
साहित्य दो प्रकार के है - अर्थवाद और विधि अर्थवाद साहित्य
से हम केवल दार्शनिक मंत्रो के अर्थ दिये गये है। विधि
साहित्य मे यज्ञ से सम्बंधित रीतियो का वर्णन है।
आरण्यक- साहित्य का सम्बंध उन लोगो से था जो जंगल

Scanned with CamScanner

में रहकर चिन्तन किया करते थे। प्रत्येक ब्राह्मण ग्रंथ के अंत में आरण्यक रहता है। ऐतरेय कौषीतकी और तैत्तिरीय आरण्यक इन्ही नामो के ब्राह्मणो से सम्बद्ध है। आरण्यक-साहित्य में हम केवल दार्शनिक चिन्तनो का वर्णन पाते है। इसमें कर्मकाण्ड तथा याज्ञिक विधियो का वर्णन नही है।

उपनिषद् एक प्रकार का दार्शनिक साहित्य है। वास्तव में उपनिषदो के द्वारा ही भारतीय अध्यात्मचिन्तन का रूप निखरा। उपनिषदो के ज्ञान का सार तत्व है। परमात्मा में व्यक्तिगत आत्मा का विलिन होना। उपनिषदो में सर्वव्यापी, निर्गुण, सर्वशक्तिशाली ब्रह्म की कल्पना की गयी है। उसे ही संसार की वास्तविक सत्ता माना गया है। उपनिषदो में ब्रह्म आत्मा और सृष्टि के विषय में गंभीर चिन्तन प्रस्तुत किया गया है। ज्ञान और नैतिक

Scanned with CamScanner

आचरण को मोक्ष का साधन बतलाया गया। 'छान्दोग्य' और बृहदारण्यक के अतिरिक्त दस उपनिषदे प्रधान है। वे है- ऐतरय कौषीतकी तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वर, ईश, केन, प्रश्न मुण्डक और माण्डूक्य। उपनिषदो मे यात्रो का विरोध किया गया है। उनका उद्देश्य है। - ज्ञान की प्राप्ति और जीवात्म के आवागमन से मोक्ष के साधन प्रस्तुत करना। वेद के अंग वेदांग कहते है वेदांग छः है। - शिक्षा व्याकरण, कल्प, छन्द, निरुक्त और ज्योतिष। वेदांग वे वेदो के अध्ययन के तरीके और मंत्रो के शुद्ध उच्चारण करने की विधि बतायी गयी है। इनमे धार्मिक रीति-रिवाजो को भी चर्चा है। मनुष्य के दायित्व और कर्तव्य का वर्णन भी वेदांगो में पाया जाता है। इनमे मनुष्य के लिए जन्म से लेकर मृत्यु तक चालीस संस्कार निर्धारित किये गये है। हिन्दू संस्कार एवं संस्कृति

Scanned with CamScanner

की उत्पत्ति इन्ही संस्कारो से हुई।

आर्य-सभ्यता का प्रसार :- उत्तर वैदिक काल में आर्य सभ्यता के भौगोलिक क्षेत्र का विस्तार हुआ। अब आर्य सभ्यता का क्षेत्र पंजाब और गंगा यमुना नदी के कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रहा। आर्यों ने सप्तसिंधु के क्षेत्र से आगे बढ़कर भारत के पूर्वी और दक्षिणी भागों में विजय प्राप्त की और अपनी सभ्यता-संस्कृति का प्रसार किया। आर्य-संस्कृति का क्षेत्र अब कुरुक्षेत्र था गंगा यमुना-दोआब 'मध्यप्रदेश' कहलाता था। यह क्षेत्र आर्य सभ्यता संस्कृति का केन्द्र बिंदु बन गया था। पूर्व में कौशल, काशी और विदेह (उत्तर बिहार) आर्यों के नये केन्द्र बन चुके थे। इस युग के साहित्य में मगध (दक्षिणबिहार) और अंग (भागलपुर) का भी उल्लेख मिलता है। लेकिन इन प्रदेशों को आर्य-संस्कृति के

के प्रभाव क्षेत्र से बाहर माना जाता था। इस युग से साहित्य में पहली बार दक्षिण के अंध्रो, बंगाल के पुण्ड्रो, उड़ीसा और मध्य प्रांत के शबरो तथा दक्षिण-पश्चिम के पुलिन्दो का उल्लेख हम पाते हैं। विदर्भ (बरार) का उल्लेख ऐतरेय और जैमिनीय ब्राह्मणो में आया है। इससे स्पष्ट होता है कि हिमालय और विन्ध्याचल के बीच के क्षेत्रों में आर्य संस्कृति का प्रसार हुआ था। इस प्रकार उत्तर वैदिक काल में आर्यों की सत्ता भारत के पूर्व और दक्षिणी प्रदेशों में प्रतिष्ठित हो गई थी।

इस बात के प्रचुर प्रमाण मिलते हैं कि उत्तर वैदिक युग में आर्यों का जीवन सुव्यवस्थित हो चुका था। प्राचीन शत्रुओं के आर्य-जनस्थानों से हट जाने के कारण संघर्ष की समस्या प्रायः प्राप्त हो चुकी थी और शान्तिकाल की प्रवृत्तियों में लग गये थे। बड़े-बड़े नगर बस गये थे।

Scanned with CamScanner

पाँचालो की राजधानी काम्पिल्य और कुरुओ की राज धानी आसन्दीवन्त विशाल नगर थे। कौशाम्बी और काशी भी प्रसिद्ध नगर थे।

जनो का नया रूप :- उत्तर वैदिक काल मे आर्यो के प्राचीन 'जनो' और कबीलो से संगठन मे प्रचुर परिवर्तन हुआ। प्राचीन जनो मे अनेक अपना महत्व खो चुके थे और अनेक की महत्ता काफी बढ़ गयी थी। ऋग्वेद के भरतो की शक्ति क्षीण हो सकी और उनका स्थान कुरुओ ने ले लिया था सम्भवतः भरतो और पुरुओ के 'जन' कुरुओ मे मिलकर खो गये थे। पाँचालो का जन कई जनो के सम्मिश्रण से बना था। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि पाँचालो का 'जन' पाँच जनो के मिश्रण से बना था। शतपथब्राह्मण के अनुसार प्राचीन काल मे पाँचाल क्रिवी कहलाते थे। इससे अस्पष्ट होता है कि पाँचालो के पाँच जनो मे एक क्रिवी था।